पाली

(कक्षा–11)

कोविड–19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र–2020–21 में विद्यालयों में समय से पठन–पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:–

1–गद्य

(क) महापरिनिब्बान सुत्तं (तृतीय, चतुर्थ, एवं पंचम भाग)

(ख) पालि प्रवेशिका (पा0 14 से 17)

2–पद्य–

(ख) वरियापिटक (अकित्तिवग्ग)– तीसरे पाठ से अन्तिम पाठ तक।

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् है–

22–पाली कक्षा–11

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र 3 घण्टे का होगा।

1–गद्य–(क) महापरिनिब्बान सुत्तं — 30 अंक

(ख) पालि प्रवेशिका (पा0 13 एवं 18)

2–पद्य–(क) धम्मपद (सुखग्गों से निरयवग्गों तक) — 30 अंक

3–व्याकरण, निबन्ध तथा अनुवाद — 30 अंक

(1) व्याकरण––

(क) शब्द रूप––निम्नांकित संज्ञाओं तथा उनके अनुरूप अन्य शब्दों के रूप — 10 अंक

[1] पुल्लिंग––बुद्ध

[2] स्त्रीलिंग––लता, रत्ति

[3] नपुंसकलिंग––फल

(ख) धातु रूप––वर्तमान, भूत तथा भविष्य काल में निम्नलिखित धातुओं के रूप भू, हस, पठ, गम, वद, रक्ख, पच, नम, दिस, बुध, रूच, सक, लिख, भुज, चुर, चिन्त।

(ग) सन्धियाँ––निम्नलिखित सूत्रों पर आधारित होंगी, परन्तु सूत्रों को कंठस्थ करना आवश्यक नहीं है।

[क] स्वर सन्धि––(1) सरोलोपी सरो, (2) परोक्वचि, (3) नव्देवा, (4) ए ओ नं

[ख] व्यंजन सन्धि––(1) व्यंजने दीधरस्सा।

[ग] निग्गहीतं सन्धि––(1) निग्गहीतं।

(घ) समास––निम्नलिखित समासों की सामज्ञन्य परिभाषा तथा उदाहरण :

[1] तत्पुरुष, [2] कर्मधारय समास।

(2) निबन्ध––पालि भाषा में संक्षिप्त निबन्ध सरल सात वाक्यों में — 10 अंक

इसिपतन, सिद्धस्थ कुमारों लुम्बिनी।

(3) अनुवाद––हिन्दी वाक्यों का पालि में रूपान्तर (अनुवाद का उद्देश्य छात्र/छात्राओं को पालि भाषा में वाक्य रचना एवं पालि भाषा का संगठन/पद्धति से परिचित कराना है)। — 10 अंक

नोट :––अनुवाद के लिये कोई पाठ्य-पुस्तक निर्धारित नहीं है।

(4) पालि साहित्य का इतिहास संगीतियाँ एवं पिटक साहित्य। — 10 अंक

(अ) गद्य––महापरिनिब्बान सुत्तं (तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम भाणवाद को छोड़कर) सम्पादक––भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिटेड, कबीर चौरा, वाराणसी।

(आ) अपठित गद्य––

(1) खुद्दक पाठ––अनुवाद-भिक्षु डा0 धर्म रत्न, प्रकाशक महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी।

(2) पालि प्रवेशिका, संकलनकर्ता डा0 कोमलचन्द्र जैन, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी (केवल पिटक साहित्य के मंगल, मंगलानि, मूर्ख परिचय शील वैभव और दानवीर से)

व्याकरण एवं पालि साहित्य के इतिहास के लिये संस्तुत पुस्तकें––

(1) पालि व्याकरण––लेखक-भिक्षु धर्म रक्षित, प्रकाशक––ज्ञान मण्डल लिमिटेड, कबीर चौरा, वाराणसी।

(2) पालि महाव्याकरण––लेखक-भिक्षु जगदीश कश्यप––प्रकाशक––महाबोधि सोसाइटी सारनाथ, वाराणसी।

(3) पालि साहित्य का इतिहास––लेखक-डा0 कोमल चन्द्र जैन, प्रकाशक––विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

(4) मैनुअल ऑफ पालि––लेखक––सी0 स0 जोशी, प्रकाशक––ओरियन्टल बुक एजेन्सी, पूना।